फोटो साभार: जॉन लाइन्स

ताज के पीछे विकास का पाठ

लीसा ए. स्वेनास्की डि हेरा

अपनी अंडरग्रेजुएट शिक्षा के तहत दो अमेरिकियों ने अपनी गर्मियां भारत के ग्रामीणों से बातचीत करते और एक भारतीय गैरसरकारी संगठन के लिए काम करते बिताई।

बहुत से अमेरिकियों की तरह इस बार गर्मियों में, जॉन लाइन्स और टेलर ट्रिपलेट 12,000 किलोमीटर का सफर तय कर ताजमहल देखने पहुंचे। लेकिन वे सिर्फ उस बेंच पर बैठकर फोटो खिंचवाने नहीं आए थे जिस पर राजकुमारी डायना बैठी थीं। इन दोनों नौजवानों ने गर्मी की छुट्टियां ताज के पीछे, यमुना के उस पार की बस्ती कछपुरा के रहने वालों से बातचीत और उनके जीवन को समझने में बिताईं।

अपने अनुभव के बारे में बात करते ट्रिपलेट बताते हैं, ''क्लास में बैठे विकास के अर्थशास्त्र और असमानताओं के बारे में जानना एक बात है- वहां तो आप वही दोहराते हैं जो किसी और ने समझा और कहा है। किताबों में आंकड़ों के रूप में दिखने वाले निम्न आय वर्ग के परिवारों के बीच जाकर खुद चीजों को समझना एक अलग ही अनुभव है।''

21 बरस के ट्रिपलेट और 22 बरस के लाइन्स टेनेसी की द यूनिवर्सिटी ऑफ़ द साउथ के छात्र हैं। अधिकांश अमेरिकी विश्वविद्यालयों की तरह यह संस्थान भी स्नातक छात्रों को कुछ समय किसी दूसरे देश में अध्ययन करने को प्रोत्साहित करता है।

ट्रिपलेट और लाइन्स ने क्रॉस कटिंग आगरा प्रोग्राम के अंतर्गत अध्ययन किया। इस कार्यक्रम को युनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फ़ॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट, आगरा नगर निगम, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग और सेंटर फ़ॉर अर्बन एंड रीजनल एक्सलेंस से सहायता प्राप्त होती है। कार्यक्रम का लक्ष्य गरीब समुदायों को आगरा के पर्यटन अर्थतंत्र से जुड़े आजीविका प्राप्ति के अवसर उपलब्ध करवाना और जीवनयापन की उनकी स्थितियों को सुधारना है। उदाहरण के बतौर कार्यक्रम के अंतर्गत बेरोज़गार युवाओं को ताज के पीछे मौजूद स्मारकों को पर्यटकों को दिखाने के लिए गाइडों के तौर पर प्रशिक्षित किया गया है। आगरा हेरिटेज ट्रेल के नाम से जाने जाने वाले इस क्षेत्र में हुमायूं की मस्जिद, मुगलकालीन बाग और बहुत से निम्न आय वर्गीय समुदाय हैं। स्त्रियों और लड़कियों के लिए चलाए जा रहे व्यावसायिक केन्द्रों में उन्हें सिलाई का काम सिखाया जाता है, उनके बनाए जूते साफ करने के दस्ताने, थालपोश वगैरह होटल उद्योग को बेचे जाते हैं।

ऊपर बाएं: राजेश कुमार (बीच में बाएं), टेलर ट्रिपलेट (मध्य में), जॉन लाइन्स (दाएं)और कछपुरा के निवासी अपनी परियोजना की पहली समूह बैठक में।
ऊपर: आगरा के कछपुरा की एक गली।
बाएं: लाइन्स, कार्यक्रम से लाभान्वित होने वाली मीरा देवी और ट्रिपलेट।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

सेवानी: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ

http://www.sewanee.edu/

क्रॉस कटिंग आगरा प्रोग्राम

http://www.usaid.gov/in/our_work/activities/Eco_growth/cc_agra.htm

सेंटर फ़ॉर अर्बन एंड रीजनल एक्सलेंस (क्योर)

http://www.cureindia.org/aboutus.html

वर्ष 2007 में लगभग 250,000 अमेरिकी छात्र अध्ययन के लिए दूसरे देशों में गए; यह संख्या उससे पिछले दशक में अध्ययन के लिए दूसरे देशों में गए छात्रों की संख्या से डेढ़ गुना है। अध्ययन के लिए यूरोप अब भी सब से लोकप्रिय है लेकिन इस रुझान में कमी आने लगी है। वर्ष 2007 में इससे पिछले साल के मुकाबले 24 प्रतिशत अधिक अमेरिकी छात्र भारत आए।

दूसरे देश में अध्ययन करने वाले छात्र एक बेहतर दृष्टि, बेहतर समझदारी के साथ लौटते हैं। ट्रिपलेट कहते हैं कि बहुत से लोग जो दूसरे देश नहीं गए हैं, यही समझते हैं कि गरीब परिवार अपनी ही करनी के कारण गरीब होते हैं, लेकिन उनका अनुभव तो एकदम अलग ही रहा।

कछपुरा में चार हफ्ते बिताने के बाद वह कहते हैं, ''मैंने इतना धीरज और इतनी आशा कभी नहीं देखी।'' ट्रिपलेट और लाइन्स किसी दूसरे देश में कम समय के लिए जाने के रुझान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे देश में जाकर अध्ययन करने वाले अमेरिकियों में से 55 प्रतिशत से अधिक आठ हफ्ते या उससे कम समय के लिए प्रवास करते हैं। विदेश में एक पूरा अध्ययन वर्ष बिताने वालों की संख्या कुल 4.5 प्रतिशत है।

अमेरिकी विकास सहायता का अध्ययन करने वाले लाइन्स कहते हैं कि कक्षा में उन्हें बताया गया था कि विकास की प्रक्रिया का ऊपर से संचालन बीते जमाने की बात हो चुका है। कछपुरा आकर उन्होंने खुद देखा और अनुभव किया कि विकास का समुदाय केन्द्रित तरीका कितना कारगर है। वह बताते हैं, ''विकास अधिक लोकतांत्रिक होता जा रहा है। लोग अपनी समस्याएं खुद बेहतर ढंग से जानते हैं।''

ट्रिपलेट और लाइन्स जब काम करने के लिए आए तो उन्हें लग रहा था कि हम से कछपुरा के लोगों के लिए नौकरियां तलाशने का काम करवाया जाएगा। लेकिन जब सेंटर फ़ॉर अर्बन एंड रीजनल एक्सलेंस के निदेशक ने उनसे क्रॉस कटिंग आगरा प्रोग्राम की सहायता से स्थापित करवाए गए शौचालयों और सैप्टिक टैंकों के जनजीवन पर प्रभाव का विश्लेषण करने को कहा तो वे अचंभित रह गए।

चार हफ़्ते दोनों छात्रों ने घर-घर घूमकर एक अनुवादक की सहायता से दर्जनों परिवारों से, हाल ही में बनवाए गए शौचालयों के उनके जीवन पर प्रभावों के बारे में गहराई से पूछताछ की। यह सर्वेक्षण उनके लिए आंखें खोल देने वाला साबित हुआ। उन्होंने पाया कि शौचालय बनने से पहले खुले में शौच के लिए जाने वाली स्त्रियों को अवांछित छेड़छाड़ और यहां तक कि बलात्कार तक झेलने की नौबत आ जाती थी।

शौचालय बनने से परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधरी है। स्त्रियों ने बताया कि पहले बरसात के मौसम में अपने बच्चों के डायरिया, उल्टियां और टायफॉयड का इलाज करवाने में वह औसतन 700 रुपये हर महीने खर्च करती थीं। उनके अलावा बच्चों की देखभाल करते हुए रोजगार का हर्जाना अलग से था। अब शौचालय बन गए हैं तो स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत है। वे अपने परिवारों का पैसे का हिसाब-किताब संभाल रही हैं।

ट्रिपलेट कहते हैं, ''एक एकदम प्राकृतिक जरूरत के लिए, सहमते-झिझकते झुटपुटे में बाहर निकलने वाली स्त्रियां अब पूरी तरह सहज और सामर्थ्य सम्पन्न दिखती हैं।''

ट्रिपलेट कहते हैं कि भारत में काम करते उन्हें अक्सर अमेरिका के अपने कॉलेज की याद आती रही। वह बताते हैं, ''विदेश में अध्ययन से जो सबसे बड़ी बात मैंने

पृष्ठ 22 पर जारी...

भारतीय मूल की शिक्षिका से अमेरिकी विद्यार्थियों को प्रेरणा

लीसा ए. स्वेनास्की डि हरेरा

टेनेसी में द यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ, सेवानी में अर्थशास्त्र की राल्फ ओवन विशिष्ट प्रोफ़ेसर **यास्मीन मोइउद्दीन** के साथ इंटरव्यू:

अर्थशास्त्र और वित्त पाठक्रम के हिस्से के तौर पर टेलर ट्रिपलेट और जॉन लाइन्स जैसे विश्वविद्यालयी छात्रों को भारत, बांग्लादेश और अन्य देशों में गैर-सरकारी संगठनों, वित्तीय संस्थानों या विकास कार्यक्रमों में काम करने को भेजने वाले सामाजिक उद्यमी प्रोग्राम का डिज़ाइन यास्मीन मोइउद्दीन ने किया। वह उसकी निदेशक भी हैं।

आपके विश्वविद्यालय में विदेश में इंटर्नशिप का क्या इतिहास है?

विदेश में इंटर्नशिप का प्रमुख कार्यक्रम बील प्रोग्राम इन इंटरनेशनल स्टडीज़ है जो अमेरिका के बाहर समाज विज्ञान में स्वनिर्देशित शोध के लिए है, लेकिन इसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय विकास पर केंद्रित इटर्नशिप कम

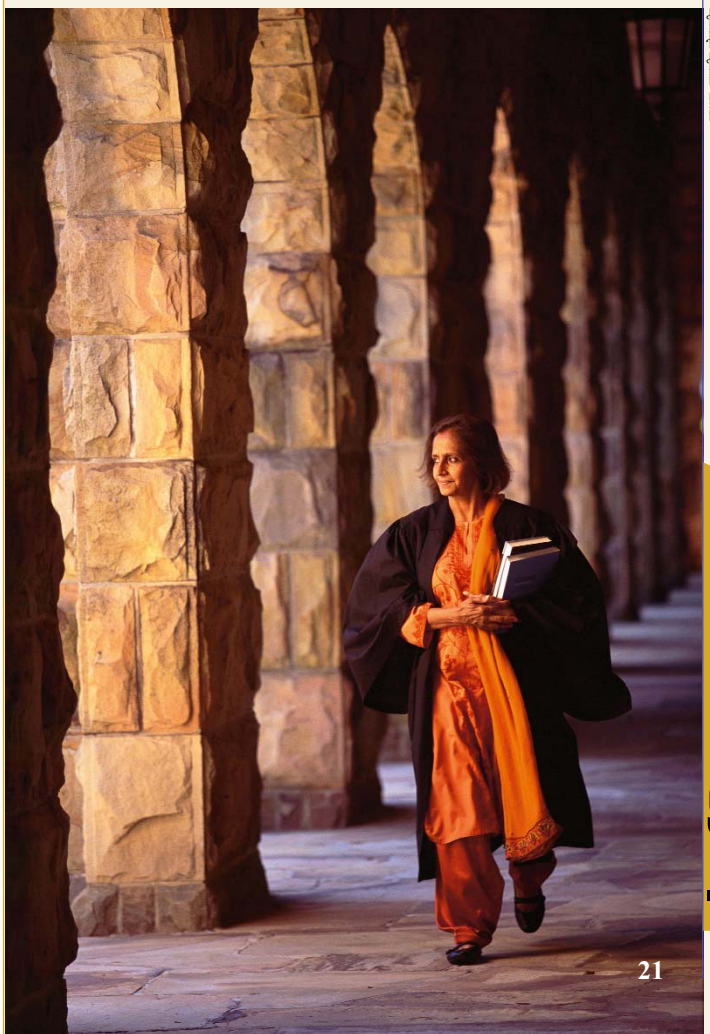

साभार: यास्मीन मोइउद्दीन

ही रही हैं।

वर्ष 2007 में शुरू हुआ सीड-सामाजिक उद्यमी शिक्षा कार्यक्रम अपेक्षाकृत नया है। टेलर और जॉन ने इसी कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2008 में बांग्लादेश और 2009 में आगरा में इंटरर्नशिप की। यह एक गहन, आठ सप्ताह का कार्यक्रम है जिसके तीन घटक हैं: दो कोर्स क्रेडिटों के लिए भारत और बांग्लादेश में समर स्टडी अब्रॉड प्रोग्राम, एक दक्षिण एशिया में छोटे ऋण संस्थानों पर, अमेरिका, लैटिन अमेरिका, एशिया या यूरोप में किसी वित्त/सूक्ष्म वित्त संस्थान में चार सप्ताह की इंटर्नशिप; और वित्त, लेखा या उद्यमिता पर एक सप्ताह का गहन व्यवसाय पूर्व प्रशिक्षण सेवानी में।

इस बार, 2009 की गर्मियों में सीड प्रोग्राम के अन्तर्गत 16 छात्रों ने भारत, बांगलादेश, डोमिनिकन रिपब्लिक और अमेरिका में 6 संगठनों में काम किया।

ये इंटर्नशिप महत्वपूर्ण क्यों है?

इन इंटर्नशिप से लौटे मेरे हर छात्र ने मुझे बताया कि ये इंटर्नशिप उनके लिए सीखने का सबसे बड़ा अनुभव रहीं- इससे उन्हें सिर्फ छोटे ऋणों और गरीबी, या किसी विदेशी संस्कृति के बारे में ही पता नहीं चला बल्कि संसार, उसमें उनकी अपनी जगह और यहां तक कि जीवन के बारे में नई अन्तर्दृष्टि भी विकसित हुई। उन सभी ने वित्तीय विश्लेषण, रिपोर्ट लिखने, शोध, प्रस्तुति और प्रौद्यौगिकी के उपयोग के कौशल सीखे या उन्हें बढ़ाया। उन्हें काम करते हुए शानदार प्रशिक्षण और ऐसे मूल्यवान अनुभव मिले जो उनके व्यावसायिक जीवन में काम आएगा। उनमें अपने संगठनों के प्रति एक समझ विकसित हुई। उनमें गरीबी से जुड़े मुद्दों को लेकर संवेदनशीलता विकसित हुई और उनमें स्थितियों को बदलने के लिए उत्साह भी पैदा हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि वाली अध्यापिका के तौर पर आप के सेवानी, टेनेसी जैसी जगह पर छात्रों को पढ़ाना कैसा अनुभव है?

साभार: यास्मीन मोइउद्दीन

उन्हें संसार की झलक दिखाना मेरे लिए एक चुनौती भी है और आनन्ददायी काम भी। मैं 30 से भी अधिक देशों में अपने शोध-अध्ययन और संयुक्त राष्ट्र और वर्ल्ड बैंक के अपने अनुभव को उनके साथ बांटकर; भारत, चीन, थाइलैंड और बांग्लादेश में उन्हें स्टडी एब्रॉड कार्यक्रमों के लिए ले जाकर, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमियों वाले अतिथि वक्ताओं को छात्रों से संवाद के लिए बुलवाकर मैं यह काम करती हूं। मैं उन्हें ग्रामीण बैंक जैसी अनूठी विकास पहलों के वीडियो भी दिखाती हूं। ग्रामीण बैंक के मोहम्मद यूनुस और ब्रैक के फैजल हसन आबिद को मैं करीब 20 बरस से जानती हूं और मैंने अपने कई छात्रों को इंटर्नशिप के लिए इन संगठनों में भेजा है। और मैं अपने छात्रों को ''पहली दुनिया की तीसरी दुनिया'' जैसे बेघर लोगों के शरणस्थलों जैसी जगहों पर भी अध्ययन के लिए ले जाती हूं। मैं उन्हें विकासशील देशों के वास्तविक उदाहरण उपलब्ध करवाकर उनसे विकास से जुड़े प्रश्नों पर लंबी चर्चाएं करती हूं। और ... हमारे बहुत से छात्र संसार के अलग-अलग हिस्सों की यात्रा कर आए हैं।

आप अमेरिका में कैसे बस गईं?

मेरा जन्म 1947 में भारत में हुआ था। उसके कुछ ही समय बाद मेरा परिवार पाकिस्तान चला आया। मैं 1974 में आर्थिक विकास में एम.ए. करने के लिए फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन की स्कॉलरशिप पर एक बरस के लिए वांडरबिल्ट यूनिवर्सिटी में पढ़ने अमेरिका आई थी। लेकिन बहुत से लोगों की तरह मेरी कहानी भी यही बताती है कि अगर आप मेहनती हों तो अमेरिका जबर्दस्त अवसरों का देश है। वांडरबिल्ट में मैंने बहुत अच्छे परिणाम दिखाए और ''अन्तर्राष्ट्रीय नारी वर्ष'' में फोर्ड फाउंडेशन ने यह कहते हुए मुझे पीएच.डी. करने के लिए चार बरस के लिए स्कॉलरशिप दे दी कि मैं अमेरिका से अर्थशास्त्र में पी.एच.डी. करने वाली पहली पाकिस्तानी स्त्री होऊंगी। 1981 में मुझे सेवानी में नौकरी मिल गई। मैं दो बार पाकिस्तान में बसने के इरादे से वहां लौटी लेकिन 1985 में मैंने अमेरिका में ही बसने की ठान ली। सेवानी में मेरी नौकरी अस्थायी ही थी लेकिन जब में पाकिस्तान गई तो 1983 से 1985 तक मेरी नौकरी सुरक्षित रखी गई। बस फिर मैं सेवानी की हो कर रह गई। मेरी रुचि जेंडर अध्ययन और छोटे ऋणों में है। और हां, मैं अमेरिकी नागरिक हूं ।

फोटो साभार: जॉन लाइन्स

सेंटर फ़ॉर अर्बन एंड रीजनल एक्सेलेस की प्रेसिडेंट और संस्थापक रेणु खोसला (पहली पंक्ति, बाएं), और उनकी टीम के सदस्य अनिंदिता मुखर्जी, नंदिता गुप्ता, ट्रिपलेट (पिछली पंक्ति, बाएं), सुकांत शुक्ला, राजेश कुमार और लाइन्स।

जानी वह यह है कि हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें संसारभर के बेहतरीन अध्यापक मिले हैं। उनके दो अध्यापक भारतवंशी हैं- डॉ. यास्मीन मोइउद्दीन और डॉ. आयंगर ने मेरे सोचने के तरीके को बदला- अब मैं स्थितियों को भुक्तभोगी लोगों की दृष्टि से देखता हूं, उन पर पश्चिमी मूल्य नहीं लादता।''

और अब ये अमेरिकी युवा क्या करेंगे?

फ्लोरिडा के वासी लाइन्स राजनीतिक विज्ञान में स्नातक अध्ययन पूरा करने के बाद कानून की पढ़ाई करेंगे या फिर किसी चिंतन समूह का हिस्सा बनेंगे।

ट्रिपलेट मिसीसिपी से हैं और उन्होंने अभी हाल में अंतरराष्ट्रीय विकास में स्नातक की डिग्री ली है। वह अमेरिकी सीनेट में नौकरी ढूंढ रहे हैं। तो क्या किसी सीनेटर के लिए नोट्स तैयार करते हुए वह कछपुरा के लोगों को याद रखेंगे?

ट्रिपलेट कहते हैं, ''यह मेरे जीवन के अविस्मरणीय अनुभवों में से है। इन लोगों से शायद मेरी भेंट अब कभी न हो, लेकिन मैं सदा उन्हें याद करूंगा और उनका ध्यान रखूंगा।''